दलहन उत्पादन में क्रान्ति लाएंगी उर्द एवं मूंग की नई प्रजातियां

उत्तराखण्ड राज्य प्रजाति विमोचन समिति द्वारा हाल ही में पंत उर्द 6 तथा पंत मूंग 7 एवं पंत मूंग 8 को उत्तराखण्ड राज्य में उगाए जाने हेतु विमोचित किया गया है। पूर्व में किसानों द्वारा उर्द तथा मूंग की उगाई जा रही विभिन्न प्रजातियां विभिन्न प्रकार के रोगों एवं कीटों से ग्रसित हो गई थी, जिससे कि किसान को प्राप्त होने वाली उपज पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा था तथा रोगों एवं कीटों की रोकथाम करने में अतिरिक्त उत्पादन लागत आ रही थी। जिससे किसानों की आय में कमी होती जा रही थी। इन परिस्थितियों में खरीफ दलहन के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा विगत में रोग एवं कीट अवरोधी तथा अधिक उपज देने वाली उर्द एवं मूंग की प्रजातियों के विकास हेतु शोध कार्य आरम्भ किये गये। जिसके परिणाम स्वरूप यह प्रजातियां विकसित की जा सकी।

पन्तनगर विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उर्द की प्रजाति पंत उर्द 6 किस्म पंत उर्द 19 X के0यू0 96–3 के संकरण से वंशावली विधि द्वारा विकसित की गयी है। उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्रों में तीन वर्षों तक किये गये प्रजाति परीक्षणों में इसकी औसत उपज मानक प्रजाति पंत उर्द 40 से 10.75 प्रतिशत एवं पंत उर्द 31 से 24.39 प्रतिशत अधिक थी। किसानों के खेतों में किये गये परीक्षणों में भी इसकी औसत उपज 1976 किग्रा0/है0 पायी गई। इसका दाना बड़े आकार का काले रंग का होता है। 100 दानों का वजन लगभग 4.2 ग्राम है।यह प्रजाति उर्द की प्रमुख बीमारियों मूंगबीन पीला मोजेक, सर्कोस्पोरा लीफ स्पॉट एवं चूर्णी फफूंदी रोगों के लिए तथा सफेद मक्खी एवं जेसिड कीट के लिए अवरोधी है। इसकी परिपक्वता अवधि 85–90 दिन है। भविष्य में यह प्रजाति पुरानी प्रजातियों पंत उर्द 19, पंत उर्द 30, पंत उर्द 35, पंत उर्द 40 एवं पंत उर्द 31, के स्थान पर किसानों द्वारा उगायी जायेगी, जिससे उर्द के उत्पादन में व्यापक बढ़ोत्तरी होने की पूरी संभावनाएं है।

पंत मूंग 7 किस्म, पंत मूंग 3 X यू0पी0एम0 99–3 के संकरण से वंशावली विधि द्वारा विकसित की गयी। उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्रों में तीन वर्षों तक किये गये प्रजाति परीक्षणों में पंत मूंग 7 की औसत उपज मानक प्रजाति पंत मूंग 4 से 10.70 प्रतिशत एवं पंत मूंग 5 से 16.22 प्रतिशत अधिक थी। किसानों के खेतों में किये गये परीक्षणों में भी पंत मूंग 7 की औसत उपज किसानों द्वारा वर्तमान में उगायी जा रही अन्य प्रचलित प्रजातियों से अधिक पायी पायी गई। पंत मूंग 7 के 100 दानों का वजन लगभग 3.26 ग्राम है।

पंत मूंग 8 किस्म, पंत मूंग 3 X एन0डी0एम0 99–3 के संकरण से वंशावली विधि द्वारा विकसित की गयी है। उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्रों में तीन वर्षों तक किये गये प्रजाति परीक्षणों में इसकी औसत उपज मानक प्रजाति पंत मूंग 4 एवं पंत मूंग 5 से अधिक पायी गई। किसानों के खेतों में किये गये परीक्षणों में भी इसकी औसत उपज मानक प्रजातियों से अधिक पायी गई। 100 दानों का वजन लगभग 3.05 ग्राम है। यह दोनों प्रजातियां की मूंग की प्रमुख बीमारियों मूंगबीन पीला मोजेक, सर्कोस्पोरा लीफ स्पॉट एवं चूर्णी फफूंदी रोगों के लिए तथा सफेद मक्खी एवं जेसिड कीट के लिए अवरोधी है। इसकी परिपक्वता अवधि 81–85 दिन है। भविष्य में यह प्रजातियां पुरानी प्रजातियों पंत मूंग 2, पंत मूंग 4 एवं पंत मूंग 5, के स्थान पर किसानों द्वारा उगायी जायेगी, जिससे मूंग के उत्पादन में व्यापक बढ़ोत्तरी होने की पूरी संभावनाएं है।

दलहन की इन प्रजातियों को विकसित करने के लिये कुलपति डा0मंगला राय द्वारा निदेशक शोध डा0जे0पी0सिंह एवम् दलहन प्रजनन परियोजना के वैज्ञानिकों डा0 आर0के0पवार, डा0एस0के0वर्मा तथा डा0अन्जू अरोरा को बधाई दी, तथा उम्मीद जताई कि दलहन की ये नई प्रजातियां देश में दलहन के उत्पादन को बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होंगी ।